8. श्री राजेन्द्र जी, देवेन्द्रजी दशोरा (मधुवन) उदयपुर 5,000/–
9. स्व. श्री फतह लाल जी दशोरा (नाना भाई) 5,000/–
(हरिदास मगरी) उदयपुर
10. सुश्री हंसा जी दशोरा, उदयपुर 5,000/–
आदि मुख्य थे।

योग 87,000/–

नोहरे में बर्तनों की पूर्ति के लिए कई महानुभवों ने बर्तन, गैस भट्टी, आदि भेंट की। इन सबका हिसाब वर्तमान कोषाध्यक्ष के पास है जिनसे विस्तृत जानकारी ली जा सकती है।

6. भावी निर्माण :–

समाज की जनसंख्या बढ़ जाने से वर्तमान में यह नोहरा अपर्याप्त हो गया है। इसलिए प्रयत्न किया जा रहा है कि इसके ऊपर एक मंजिल और बना दी जाय तो इससे अधिक सुविधा हो जायगी। कई व्यक्तियों ने इसके लिए काफी राशि देने का आश्वासन दिया है तथा समाज से चन्दा करके इस कार्य को करना आवश्यक है। इसमें सभी जातीय बन्धुओं का सहयोग अपेक्षित है। श्री युगल किशोर जी दशोरा (दशोरा गली) ने इसमें 5000/– दिये हैं।

7. हाटकेश्वर मंदिर व्यवस्था:–

दशोरा ब्राह्मण जाति, नागरों में प्रश्नोरा नागरों की ही एक उप जाति है जिसके इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर है। मेवाड़ में इस जाति का उदयपुर में ही एक मात्र मंदिर है जिनकी ये पूजा करते है। मेवाड़ में अन्यत्र कहीं इनका मंदिर नहीं है।

उदयपुर में भी इस मंदिर की स्थापना बहुत बाद में हुई। इस मंदिर के निर्माण के विषय में श्री युगल किशोर जी दशोरा, दशोरा गली उदयपुर वाले बताते हैं कि वर्तमान मंदिर के स्थान पर पहले एक पीपल का वृक्ष था जिस पर दशोरा लोग जल चढ़ाया करते थे। बाद में इस स्थान पर एक चबूतरी का निर्माण कर इस पर नर्मदेश्वर महादेव की स्थापना की गई। इसके बाद जाति वालों ने चन्दा इकट्ठा कर इस स्थान पर एक देवरी बना दी। यह सब कार्य समाज के चन्दे से किया गया जिसकी सूची श्री भीमशंकर जी के पास थी जो बाद में श्री गोपी शंकर जी को दी गई। इसमें सर्वाधिक चन्दा श्री दया लाल जी ने दिया तथा श्री देवकिशन जी तथा श्री चत्रभुज जी ने इसमें सहयोग किया। बाद में धीरे–धीरे इस समाज ने और चन्दा इकट्ठा कर यहाँ मंदिर का निर्माण कराया। फिर श्री सदाशिव जी ने चन्दा इकट्ठा कर इसकी पूजा की व्यवस्था की तथा उमा शंकर जी ने इसमें चोके जड़वाये। अब इसकी पूजा की व्यवस्था यहाँ का दशोरा समाज वार्षिक चन्दा लेकर कर रहा है। बड़नगर में सर्वप्रथम हाटकेश्वर मंदिर की स्थापना ईसवी सन् की तीसरी शताब्दी में हुई। उसी समय से नागरों ने हाटकेश्वर की उपासना आरंभ की। यह स्थापना चैत्र सुदी 14 के दिन कराई थी इसलिए नागर इसी दिन हाटकेश्वर का पाटोत्सव मनाते हैं। हाटकेश्वर का वर्णन स्कन्दपुराण, शिवपुराण, वामनपुराण, भागवत महापुराण में भी मिलता है।